

class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Subject) Com - 100

by Ravishan Kumar

1) जागी फिर एक बार शीर्षक कविता की व्याख्या करें

उत्तर - जागी फिर एक बार शीर्षक कविता प्रसिद्ध दायवादी कवि श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की एक अनुपम, बेजोड़ एवं सराहनीय रचना है, जिसमें कवि ने गुलामी की सा सेंज पर सोये भारतवासियों को एक बार फिर से जगाने का आवानुन किया है।

- जागी फिर एक बार शीर्षक कविता में निराला जी ने भारत के गौरवमय इतिहास की याद दिलाना चाहा है। कवि का मानना है कि हमारी जन्मभूमि वह वंदनीय एवं पूजनीय भूमि है, जहाँ राक्षसों का संहार करने के लिए देवगण अवतरित हुए। हमारे देश में ऐसे-ऐसे महान तृषि-मुनि अवतरित हुए, जिन्होंने इसी पृथ्वी पर दुनियाँ को नष्ट होने से बचाने के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया। उदाहरण के लिए दधीचि तृषि ने इन्द्र मगवान को दड़िधेयाँ का हथियार बनाने के लिए अपना शरीर दान कर दिया। हमारे देश में ऐसे-ऐसे महान सम्राटों का जन्म हुआ, जिन्होंने स्वयं मिथिला बनकर अपना जीवन व्यतीत किया, किंतु अपनी प्रजा को शही-बिल-खली देखना नहीं चाहा।

हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित
जागो फिर एक बार शीर्षक
कविता में निराला जी ने भारत-
वासियों को जमाने के लिए
बहुत सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया
है। निम्न पंक्तियाँ देखिए -

५ सिंदी की गोद से
छिनवा हो शिशु कौन ?
मौन भी क्या रहती

वह रहने छान, ७
अर्थात् कौन ऐसा व्यक्ति है जो
जंगल में रहने वाली सिंदी का
बच्चा छिन ले, यदि कोई उसकी
गोद से उसकी संतान छिनता
है तो क्या वह क्रोध नहीं
कर सकती। वह जीते जी अपनी
आँखों से दूर अपने बच्चे को
नहीं होने देंगी। पर, यह कैसे
विडंबना है कि हम भारतवासियों
की गोद से अपना आजादी रुपी
संतान छिनती जा रही है। हम
सुपचाप क्यों बेठे हैं। हम अपने
एक के लिए, अपने देश को
गुलामी की बेड़ियों से छुड़ाने
के लिए आजादी की नदियों
बहाने के लिए लड़ते क्यों नहीं
हैं? मौन क्यों बेठे हैं? कवि
कहते हैं -

५ पश्चिम की उम्मीद नहीं
गीता है गीता है
स्मरण करो बार-बार
जागो फिर एक बार कि

निष्कर्षित, हम कह सकते हैं कि
यह कविता देश प्रेम की भावना
को जगाती है।